Shri Dakshinamurti Shiva Mantra

श्रीदक्षिणामूर्ति शिव मंत्र एवं स्तोत्रम्

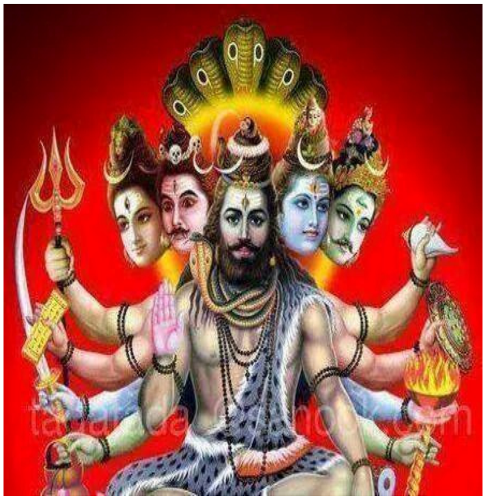

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीदक्षिणामूर्तिमंत्रस्य शुकऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदक्षिणामूर्तिशम्भुर्देवता, चतुर्विधपुरुषार्थे सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- ॐ शुकऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीदक्षिणामूर्तिशम्भुर्देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास- ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये ह्रीं ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तुभ्यं ह्रीं ॐ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रीं वटमूलनिवासिने ह्रीं ॐ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं ध्यानैकनिरतांगाय ह्रीं ॐ अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं नमो रुद्राय ह्रीं ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं शम्भवे ह्रीं ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास- ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये ह्रीं ॐ हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं तुभ्यं ह्रीं ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रीं वटमूलनिवासिने ह्रीं ॐ शिखायै वषट्। ॐ ह्रीं ध्यानैकनिरतांगाय ह्रीं ॐ कवचाय हुं। ॐ ह्रीं नमो रुद्राय ह्रीं ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रीं शम्भवे ह्रीं ॐ अस्त्राय फट्।

मंत्रवर्णन्यास- ॐ नमः मूर्ध्नि। ॐ ह्रीं नमः भाले। ॐ दं नमः दक्षनेत्रे। ॐ क्षिं नमः वामनेत्रे। ॐ णां नमः दक्षिणकर्णे। ॐ मूं नमः वामकर्णे। ॐ र्तं नमः दक्षिणगण्डे। ॐ यें नमः वामगण्डे। ॐ तुं नमः नासिकयोः। ॐ भ्यं नमः मुखे। ॐ वं नमः दक्षिणहस्तमूले। ॐ टं नमः दक्षकपूरि। ॐ मूं नमः दक्षिणमणिबंधे। ॐ लं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले। ॐ निं नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे। ॐ वां नमः वामहस्तमूले। ॐ सिं नमः वामकूपरि। ॐ नें नमः वाममणिबंधे। ॐ ध्यां नमः वामहस्तांगुलिमूले। ॐ नैं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे। ॐ कं नमः गले। ॐ निं नमः स्तनयोः। ॐ रं नमः हृदि। ॐ तां नमः नाभौ। ॐ गां नमः कट्याम्। ॐ यं नमः गुह्ये। ॐ नं नमः दक्षिणपादमूले। ॐ मां नमः दक्षिणजानुनि। ॐ रुं नमः दक्षिणगुल्फे। ॐ द्रां नमः दक्षिणपादमूले। ॐ यं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे। ॐ शं नमः वामपादमूले। ॐ भं नमः वामजानुनि। ॐ वें नमः वामगुल्फे। ॐ ह्रीं नमः वामपादांगुलिमूले। ॐ ॐ नमः वामपादांगुल्यग्रे।

ध्यानम्- सजलैः स्थलजैः पुष्पैरामोदिभिरलंकृतम्। श्रृण्वद्भिर्वेदशास्त्राणि शुकवृन्दैर्निषेवितम्।। संसारतापविच्छेद कुशलच्छायमद्भुतम्। विचिंत्य तस्य मूले रत्नसिंहासने शुभे।।

आसीनममिताकल्पं शरच्चन्द्रनिभाननम्। स्तूयमानं मुनिगणै र्दिव्यज्ञानाभिलाषिभिः।। संस्मरेज्जगतामाद्यं दक्षिणामूर्तिमव्ययम्। कैलासाद्रिनिभं शशांकशकलस्फूर्जज्जटामंडितं।। नासालोकनतत्परं त्रिनयनं वीरासनाध्यासितम्। मुद्राटंक कुरंग जानु विलसत्पाणिं प्रसन्नाननं।। कक्षाबद्धभुजंगमं मुनिवृतं वंदे महेशं परम्।

मंत्र-1- "ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये तुभ्यं वटमूलनिवासिने। ध्यानैकनिरतांगाय नमो रुद्राय शंभवे ह्रीं ॐ।"

मंत्र-2- "ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा।" इस मंत्र के ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता दक्षिणामूर्ति, बीज मेधा, शक्ति स्वाहा है।

ध्यानम्- व्याख्यापीठेऽतिशुभ्रं च भस्मोद्धलितविग्रहम्। ज्ञानमुद्राक्षमालाढ्यं वीणा पुस्तक धारिणम्।।

संक्षिप्त विधि :- शैवाचार्य से दीक्षा ग्रहण कर जितेन्द्रियपूर्वक साधक दक्षिणामूर्ति मंत्र का चिंतन करे। शारदातिलक में तीन लाख बीस हजार का पुरश्चरण कहा गया है। परंतु कलिकाल में धैर्यपूर्वक चार गुणा अधिक जप करना चाहिये। दुग्ध, शुद्ध घृतयुक्त तिलों द्वारा दशांश होम करना या करवाना चाहिये। अगर साधक जप करने में तो सक्षम है, परंतु हवन की सही

विधि नहीं जानता है तो कर्मकाण्डी विद्वान या गुरु द्वारा होम क्रिया को सम्पन्न करना चाहिये। इस मंत्र के प्रभाव से विद्या, बुद्धि, ज्ञान एवं मेधा की अभिवृद्धि होती है। यदि इस मंत्र द्वारा अभिमंत्रित विशुद्ध जल से साधक अपने शिर पर अभिषिंचन करे तो वह लक्ष्मी, कीर्ति, आरोग्यता एवं बल को प्राप्त करता है। जो कण्ठ पर्यन्त जल में स्थित होकर प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व एक हजार मंत्र का जप करता है वह कवियों में अग्रणी होता है। जो व्यक्ति भगवती पार्वती के साथ स्थित शिव का ध्यान कर, लक्ष्मी प्रयोगों सहित इस मंत्र का जप करता है वह महालक्ष्मी को सिद्ध करता है। विलक्षण ज्ञान और वाक्सिद्धि की प्राप्ति के लाभार्थ हेतु ये दोनों मंत्र श्रेष्ठ हैं। एकान्त गृहमन्दिर, शिवमन्दिर अथवा वटवृक्ष के मूल में इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है। शैव विधि अनुसार उत्तम सामग्रियों से पूजन उपरान्त् मंत्र जपारम्भ करना चाहिये। श्रेष्ठ एवं शीघ्र लाभ हेतु शैवाचार्य के मागदर्शन में ही इस साधना को सम्पन्न करना चाहिये।

||श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्||

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया।

यः साक्षात्कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमः इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।1।

बीजास्यान्तरिवाङ्कुरो जगदिदं प्राङ्निर्विकल्पं शनैर्मायाकल्पित देशकालकलनावैचित्र्यचित्रीकृतम्।

मायावीव विजृम्भयत्यपि महायोगीव यः स्वेच्छया तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमः इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।2।

यस्यैव स्फुरणं सदात्मकमसत्कल्पार्थकं भासते साक्षात् तत्त्वमसीति वेदवचसा यो बोधयत्याश्रितान्।

यत्साक्षात्करणाद्भवेन्न पुनरावृत्तिर्भवाम्भोनिधौ तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमः इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।3।

नानाच्छिद्रघटोदरस्थितमहादीपप्रभाभास्वरं ज्ञानं यस्य तु चक्षुरादिकरणद्वारा बहिः स्पन्दते।

जानामीति तमेव भान्तमनुभात्येतत् समस्तं जगत् तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमः इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।4।

देहं प्राणमपीन्द्रियाण्यपि चलां बुद्धिं च शून्यं विदुः
स्त्रीबालान्धजडोपमास्त्वहमिति भ्रान्ता भृशं वादिनः।

मायाशक्तिविलासकल्पितमहाव्यामोहसंहारिणे तस्मै श्रीगुरुमूर्तये
नमः इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।5।

राहुग्रस्तदिवाकरेन्दुसदृशो मायासमाच्छादनात् सन्मात्रः
करणोपसंहरणतो योऽभूत् सुषुप्तः पुमान्।

प्रागस्वाप्समिति प्रबोधसमये यः प्रत्यभिज्ञायते तस्मै श्रीगुरुमूर्तये
नमः इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।6।

बाल्यादिष्वपि जाग्रदादिषु तथा सर्वास्ववस्थास्वपि
व्यावृत्तास्वनुवर्तमानमहमित्यन्तः स्फुरन्तं सदा।

स्वात्मानं प्रकटीकरोति भजतां यो मुद्रया भद्रया तस्मै श्रीगुरुमूर्तये
नमः इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।7।

विश्वं पश्यति कार्यकारणातया स्वस्वामिसम्बन्धतः शिष्याचार्यतया
तथैव पितृपुत्राद्यात्मना भेदतः।

स्वप्ने जाग्रति वा य एष पुरुषो मायापरिभ्रामितस्तस्मै
श्रीगुरुमूर्तये नमः इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।8।

भूरम्भांस्यनलोऽनिलोऽम्बरमहर्नाथो हिमांशुः पुमानित्याभाति चराचरात्मकमिदं यस्यैव मूर्त्यष्टकम्।

नान्यात्किंचन विद्यते विमृशतां यस्मात् परस्माद्विभोस्तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमः इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।9।

सर्वात्मत्वमिति स्फुटीकृतमिदं यस्मादमुष्मिन् स्तवे तेनास्य श्रवणात् तदर्थमननाद्ध्यानाच्च संकीर्तनात्।

सर्वात्मत्वमहाविभूतिसहितं स्यादीश्वरत्वं स्वतः सिध्येत् तत्पुनरष्टधा परिणतं चैश्वर्यमव्याहतम्।10।

वटविटपिसमीपे भूमिभागे निषण्णं सकलमुनिजनानां ज्ञानदातारमारात्।

त्रिभुवनगुरुमीशं दक्षिणामूर्तिदेवं जननमरणदुःखच्छेददक्षं नमामि।11।

चित्रं वटतरोर्मूले वृद्धाः शिष्या गुरुर्युवा। गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्यास्तु छिन्नसंशयाः।12।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi
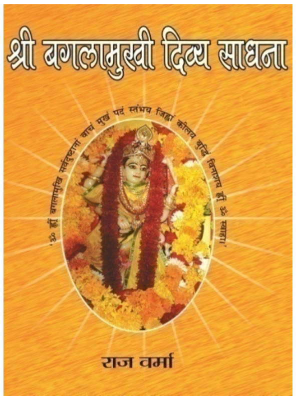
- Shri Baglamukhi Divya Sadhana